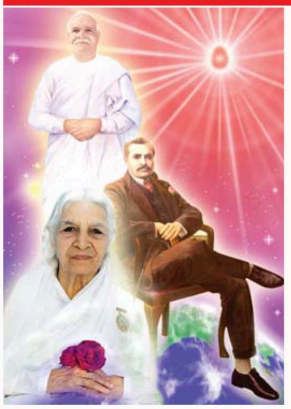

अनोखे साक्षात्कार ने कराया बाबा पर सम्पूर्ण निश्चय

ब्रह्माकुमारी संस्था की पूर्व संयुक्त मुख्य प्रशासिका दादी निर्मलशांता ने बताया कि शिवबाबा की प्रवेशता के पहले बाबा लौकिक परिवार को बहुत लाड़-प्यार से पालते थे। लेकिन शिवबाबा की प्रवेशता के बाद ऐसे लगता था जैसे हमें पहचानते ही नहीं हैं। ऐसे पूछते थे -'किसके सामने खड़ी हो? पहचानती हो?' ये शब्द सुनकर आश्चर्य लगता था कि जन्मदाता बाप और ये हमसे पूछे कि पहचानती हो? ऐसे मिलते थे जैसे हम अनजान हैं। ऐसा सुनकर जरा फील होता था कि बाबा को यह क्या हो गया। ऐसा सोचने पर मेरी लौकिक माँ मुझे समझाती थी कि ये तुम्हारा बाबा वो पहले वाला बाबा नहीं है। इसमें परमात्मा आता है। तो मुझे आश्चर्य लगता था। मुझे इस बात का सम्पूर्ण विश्वास और निश्चय कराने के लिए तथा मेरे लौकिक जीवन में सम्पूर्ण परिवर्तन लाने के लिए विशेष चमत्कार मैंने देखा। उसी दिन जब मैं रात को सो गई तो फिर से मुझे वही आवाज हुई - पहचानती हो? किसके सामने खड़ी हो? तो मैंने सोचा आज बाबा से दिन में बात हुई थी, इसलिए मुझे नींद में यही सपना आया है। फिर जैसे ही सोना चाहा तो कमरे में सूर्य की लाइट के समान रोशनी आने लगी। बड़ी तेज लाइट जैसे कोई सर्चलाइट आ रही हो। अत:मैं उठकर बैठ गई।

तो क्या देखा -सफेद लाइट के बीच में से बाबा आ रहे हैं। उसमें कभी श्रीकृष्ण तो कभी साकार बाबा दिखाई दे रहा था। इस प्रकार दोनों ही रूप आपस में अदली-बदली हो रहे थे। तो विचार चला कि ये मेरा बाबा है या श्रीकृष्ण है। इस प्रकार देखते-देखते बाबा मेरे पास बहुत नजदीक चला आया। तथा श्रीकृष्ण के रूप में मेरे से हाथ मिलाने लगा -जैसे ही मैंने अपना हाथ उसके हाथ में दिया तो बाबा दिखाई देता है। बाबा के हाथ में मेरा हाथ है -फिर वही कृष्ण बन जाता है। बस उसी समय से मेरी बुद्धि में परिवर्तन हो गया। तथा हाथ मिलाते हुए मैंने मन में जैसे प्रतिज्ञा की कि - बस बाबा! मैंने आपको पहचान लिया। आप जैसा कहेंगे, जो कहेंगे, मैं वही करूंगी। ऐसा पक्का, निश्चय करने के बाद, उसी दिन से मेरी सारी दिनचर्या में महान परिवर्तन आ गया।

मन में वैराग्य आ गया तथा सादगी का जीवन अच्छा लगने लगा। वैसे घर में नौकर आदि सब थे। हाथ से पानी पीने की भी दरकार नहीं थी। लेकिन अब तो जो काम कभी भी नहीं किया था, वो बड़े प्यार से करने लगी। जैसे खाना बनाना, घर की सफाई आदि के कार्य सब स्वयं अपने हाथों से करने लग गई।

परमात्म प्रदत्त..

- पेज 1 का शेष

हो गया। उन्हें विभिन्न देवताओं तथा निराकार प्रकाश-स्वरूप शिव परमात्मा के साक्षात्कार हुए। उन्हें विश्व में हो रही घटनाओं तथा आगे होने वाली घटनाओं के भी दर्शन हुए तथा उनकी आगामी भूमिका के बारे में अव्यक्त ढंग से भान हुआ। उन्होंने सारी सृष्टि का सनातन चक्र भी देखा। शिव, गीता और कल्प-वृक्ष में परिभ्रमण करती आत्माओं का यह ज्ञान कुछ ऐसा था, जो अब तक बताये गये ज्ञान एवं जानकारियों से भिन्न है। आत्मा और परमात्मा के सम्बन्ध का ज्ञान भी नितांत नया था। दादा लेखराज, उन्हें जो हो रहा था, उसे मिथ्या कहकर न तो छोड़ सकते थे ना उस दर्शन को अमान्य कर सकते थे, जिसे उन्होने ज्ञान के रूप में पाया था और अनुभव किया था। ज्ञान की इस गंगा में नहाकर दादा लेखराज अब पूरी तरह बदल चुके थे। उनमें आया परिवर्तन एकदम रूहानियत से भरा हुआ था। जो लोग उनको जानते थे, उनके लिए दादा अब बिल्कुल बदले-बदले लगते थे। बोल, व्यवहार व चाल सभी कुछ बदल चुका था। उन्होंने जो ज्ञान पाया था वह प्रचलित ईश्वरीय ज्ञान से भिन्न था। पर दादा लेखराज जिस अधिकार भरी वाणी में उसे बताते थे, उससे लगता था कि उन्हें अपने ज्ञान पर तनिक भी संदेह नहीं है। 1936-37 में अपने इस अनुभव एवं बोध के बाद उन्होने अपने को शिव परमात्मा प्रदत्त अपनी ब्रह्मा भूमिका के लिए सौंप दिया। उनका यह ज्ञान-यज्ञ 'ओम मंडली' से प्रारंभ होकर 'प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय' में रूपांतरित हुआ और सतत विस्तार पाता रहा। 18 जनवरी 1969 की उनकी देह त्यागकर अव्यक्त होने के बाद भी आत्माओं को पवित्र एवं दिव्य गुणों से सम्पन्न बनाकर नव-विश्व का सृजन करने के लिए प्रारंभ हुआ यह यज्ञ अब भी जारी है और वे ही अब भी ज्ञान-यज्ञ के सूत्रधार हैं।

वह देह, जिसमें परमात्म-सत्ता आई हो या उसे संस्कारित करके गई हो, चुम्बक की तरह अपने पास आने वाले लौह-कणों में स्फुरण पैदा किये बिना नहीं रहती। यह उसका एक तरह से नैसर्गिक गुण हो जाता है। हमने, आपने इतने अनुभव प्रसंग पढ़े-सुने या देखे हैं, उनमें ऐसा सदा ही हुआ कि परमात्मा की लय में नाचा व्यक्ति अपने पास आये व्यक्ति में नाच पैदा नहीं करता, वह तो स्वत: हो जाता है। ऐसे बुद्ध पुरूषों के प्रभाक्षेत्र में प्रवेश करते ही आपको बदलाव महसूस होने लगता है। दादा लेखराज के पास जाते ही स्त्री, पुरूष तथा बालक उनकी दृष्टि पाते ही भावाविष्ट हो जाया करते थे। ऐसे अनेकों लोग अभी हैं जो यह बताते हैं कि उन्हें दादा के पास जाने पर भिन्न-भिन्न रूपों अथवा लोकों के साक्षात्कार हुए। उनसे मिलकर आया हुआ शायद ही कोई ऐसा हो, जो यह न कहे कि यह व्यक्ति तो अनूठा है। महसूस करने की इसी स्थिति को संभवत: रूहानियत या भागवत अनुभव कहा जाता है। रूहानियत या भागवत अनुभव का एक अन्य रूप भी है। अब तक यही अनुभव है कि जिसने अनुभव किया हो, ऐसे व्यक्ति के पीछे ही लोग अनुभव पाने के लिए चले हैं। अनुभव पाने वालों का किस्सा सुनाने वालों अथवा उनकी व्याख्या करने वाले पंडितों या व्याख्याकारों के पीछे जमातें नहीं चलीं। यदि चलीं भी तो कुछ दूर या देर तक ही। कारण, शायद यही रहा होगा कि जिसने स्वयं ही नहीं जाना, वह बतायेगा भी क्या? फिर, जिन्होंने जाना उनमें से भी ज्यादातर लोग तो मौन हो गये। इसलिए कि उस ज्ञान या अनुभव को कहना उन्हें नहीं आता था। जिसने भी ऐसी सम्बोधि पाई उसके लिए वह अनुभव था और बिल्कुल नया। उसे कह पाना सरल कभी नहीं रहा। वही कह पाये जिन्हें बताने की भूमिका भी सौंपी गई। बता पाने की यह क्षमता भी उसी परमात्म-सत्ता की देन कही जा सकती है। कहने वाला तो प्राय: अपने को मात्र माध्यम अथवा निमित्त मानता है। इसीलिए तो ऐसा होता है कि लोग सिर्फ बुद्ध, महावीर, रामकृष्ण या ऐसे ही जान लेने वालों के पीछे चले। और उनमें भी उनके पीछे दूर और देर तक चल पाये। जिनको संभवत: परमात्मा ने ही कोई निमित्त भूमिका सौंपी थी।

दादा लेखराज न तो शास्त्रों के ज्ञाता थे, न तो भाषा के विद्वान। उन्होंने तो उस परमात्म-सत्ता को जाना भर था और परमसत्ता ने ही उन्हें युगनिर्माण के कार्य के लिए चुना था। इस तरह से वे ईश्वराधिकृत निमित्त थे। इसलिए लोग उनसे जानने के लिए उनके पास जमा हो गये। उन्होंने भी अपनी साधारण बोलचाल की भाषा में ही उस ईश्वरीय ज्ञान को साधिकार बताया जिसे बताने में सामान्यत: भाषा भी डगमगाने लगती है। इस रूप में महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि उनके माध्यम को परमात्म सत्ता ने अपने कार्य का निमित्त बनाया था। इसी भूमिका के बारे में तो गीता का वचन है -'यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत:, ...।

रामचरित मानस में इसे इस तरह बताया गया -'जब-जब होई धर्म की हानि, बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी, तब-तब प्रभु लै मनुज शरीरा, हरहि कृपानिधि सज्जन पीरा।

इसी भूमिका के लिए निमित्त बने दादा लेखराज ने अपनी वाणी से अपने ज्ञान की गंगा में जिनको भी सराबोर किया वे फिर लौटकर नहीं गये। 1937 से प्रारंभ हुआ यह ज्ञान-यज्ञ कभी कमजोर नहीं पड़ा वरन् लगातार ज्ञान-पिपासुओं को आकर्षित करता रहा है। यह भी एक बड़ी कसौटी है जिस पर दादा लेखराज कई महापुरूषों में आगे खड़े दिखाई पड़ते हैं। दादा लेखराज ने जब सर्वप्रथम ज्ञानामृत-पान किया था, तब अपने एक पत्र में अपने घरवालों को लिखा था - पा लिया वह सब, जो पाना था। अब कुछ बाकी नहीं रहा। उनके इस ज्ञान से नहाये लोग भी अब यही कहते है -पा लिया जो पाना था, अब कुछ शेष नहीं। यही सच्चे अनुभव की कसौटी है।

मन पर प्रभाव डालती है टी.वी.

प्रश्न:- टी.वी. का प्रभाव बच्चों के ऊपर बहुत अच्छा नहीं पड़ता है। हम उन्हें कहते भी हैं कि टी.वी. इतना मत देखो, क्यों? माता-पिता खुद के लिए कहते हैं कि हम देखते हैं तो हमें फर्क नहीं पड़ेगा क्योंकि हमें तो न्यूज देखनी पड़ती है, हमें ये तो देखना ही है। आज माता-पिता ही टी.वी. से निकल नहीं पाते, तो बच्चों के ऊपर क्या ध्यान देंगे।

उत्तर:- हम बच्चों को कहते हैं कि टी.वी. मत देखो क्योंकि हमें लगता है कि वह अपना अधिक समय इस पर व्यतीत न करें। इतना समय उन्हें पढ़ना चाहिए और अधिक टी.वी. देखने से उनकी आँखों पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है। बहुत कम लोग जानते हैं कि उसका प्रभाव हमारे माइंड पर कितना पड़ता है। आज हम टी.वी. देख रहे हैं, मूवीज़ देख रहे हैं और हम सिर्फ अकेले तो नहीं देख रहे हैं, हमारे साथ हमारे बच्चे भी तो होते हैं। जितना वो छोटे हैं उतना उनके मन पर ज्यादा प्रभाव पड़ता है, क्योंकि उनकी तो अभी मानसिक शक्ति का विकास ही हो रहा है कि थॉट को कैसे क्रियेट करें। अब सपोज़ मैंने एक घंटा- दो घंटा भी टी.वी. देखा तो उसका प्रभाव हमारे मन पर लम्बे समय तक रहता है। अब उसके बाद पढ़ने के लिए बैठो। माइंड तो नम अवस्था में है अभी, फिर उसको सक्रिय करना, एकाग्रता के लेवल पर लेकर आना, क्योंकि उसने एकाग्र होना बंद कर दिया था।

प्रश्न:- टी.वी.देखने के पश्चात किताब खोलकर पढ़ाई करने बैठना क्या आसान है?

उत्तर:-- फिर माइंड को बहुत धीरे-धीरे वापिस उस स्टेज पर लेकर आना होता है। टी.वी. का प्रभाव, मीडिया का प्रभाव हमें समझना पड़ेगा कि वो हमारी माइंड की क्रियेटिविटी पर धीरे-धीरे प्रभाव डालता है। आज मनोरंजन के नाम पर बहुत कुछ होता है।

हमारी आदत इतनी पक्की हो गयी है कि हम स्वीच ऑफ भी नहीं कर पाते हैं। एक ऐसा दृश्य सामने आता है, जो हम सबको तकलीफ दे रहा है लेकिन फिर भी हम सब बैठकर देखते हैं, डिस्कस करते हैं। डिस्कशन का विषय क्या होता है कि आज रात का एपीसोड कितना अच्छा था। जब आप अगले दिन सुबह वॉक पर जायेंगे, ऑफिस जायेंगे तो वही डिस्कशन। तो वो नेगेटिविटी सिर्फ देखने और सुनने तक सीमित नहीं रही लेकिन उसके बाद उसका इतनी देर तक प्रभाव रहता है। परिवार के बीच भी टी.वी.की निगेटिविटी प्रभाव डालने लगती है।

प्रश्न:- हम टी.वी. देखने के आदी हो गये हैं, न चाहते हुए भी हम टेलीविजन देखते हैं। इससे छूटें कैसे?

उत्तर:-हमें ये समझना चाहिए कि हम अपने अंदर क्या भर रहे हैं। आज बहुत सारी बातें जो हम समझते थे कि हमारे लिए गलत है या समाज की मर्यादाओं के हिसाब से ठीक नहीं है, आज उन्हीं सब बातों को सरेआम कहा जाता है। जब दुनिया से उसको इतनी स्वीकृति मिल रही है, उसको इतना बढ़ा-चढ़ा कर प्रदर्शित किया जा रहा है, सारे लोग उसकी प्रशंसा कर रहे हैं तो हरेक का माइंड सेट कैसा क्रियेट होता जायेगा। लोग इसे स्वीकार कर रहे हैं, दिस इज़ ओ.के.। जितना इस तरह की सूचना अपने अंदर डालेंगे हमारी सोच की क्वालिटी क्या होती जायेगी? हमारा सही और गलत जो हम कभी-कभी सोचते तो थे कि ये सही है, ये गलत है। अब तो शायद हम उसके ऊपर बहुत ज्यादा सोच भी नहीं पायेंगे। हमारी निर्णय शक्ति व परखने की शक्ति भी प्रभावित हो रही है। स्वयं को इन प्रभावों से बचाने के लिए टी.वी. पर कम समय दें।